St. Peter's Senior Secondary School

(Affiliated to C.B.S.E. No. 2630043)

CLASS – 12 **(ASSIGNMENT– 8)**

SUBJECT – HINDI **DATE : 26 MAY,2020 (TUESDAY)**

पाठ (1) आत्मपरिचय (हरिवंश राय बच्चन)

----------Cont.----------

(5) मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पडा, तुम कहते, छंद बनाना,
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक क्या दीवान"

मैं बीवानों का वेश लिए फिरता हूँ
मैं मादकता निद्भाशष लिए फिरता ही
जिसकी सुनकर ज़य शम, झुके; लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ /

शब्दार्थ:- फूट पड़ा - जोर से रोया। दीवाना-पागल। मादकता-मस्ती। नि:शेष-संपूर्ण।

प्रसंग:-प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित कविता 'आत्मपरिचय' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध गीतकार 'हरिवंश राय बच्चन' जी हैं। इस कविता में कवि जीवन को जीने की अपनी शैली बताता है। साथ ही दुनिया से अपने द्वंद्वात्मक संबंधों को उजागर करता है।

व्याख्या:- कवि कहता है कि प्रेम की पीड़ा के कारण उसका मन रोता है अर्थात हृदय की व्यथा शब्द रूप में प्रकट हुई है । उसके रोने को संसार गाना मान बैठता है। जब वेदना अधिक हो जाती है तो वह दुख को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है। संसार इस प्रक्रिया को छंद बनाना कहती है। कवि प्रश्न करता है कि यह संसार मुझे कवि के रूप में अपनाने के लिए तैयार क्यों है? वह स्वयं को नया दीवाना कहता है जो हर स्थिति में मस्त रहता है।

समाज उसे दीवाना क्यों नहीं स्वीकार करता। वह दीवानों का रूप धारण करके संसार में घूमता रहता है। उसके जीवन में जो मस्ती शेष रह गई है, उसे लिए वह घूमता रहता है। इस मस्ती को सुनकर सारा संसार झूम उठता है। कवि के गीतों की मस्ती सुनकर लोग प्रेम में झुक जाते हैं तथा आनंद से झूमने

लगते हैं। मस्ती के संदेश को लेकर कवि संसार में घूमता है जिसे लोग गीत समझने की भूल कर बैठते हैं।

विशेष-

1. कवि मस्त प्रकृति का व्यक्ति है। यह मस्ती उसके गीतों से फूट पड़ती है।
2. खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।
3. 'मैं' शैली के प्रयोग से कवि ने अपनी बात कही है।

(ख) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है! (एक गीत)

(1) हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-

यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता हैं!
दिन जल्दी-जल्दी ढोलता हैं!

शब्दार्थ:- ढलता - समाप्त होता। पथ-रास्ता। मंजिल -लक्ष्य। पंथी - यात्री।

प्रसंग:-प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित गीत 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!' से उद्धृत है। इसके कवि "हरिवंशराय बच्चन" जी हैं। इस गीत में कवि ने एक जवान की कुंता तथा प्रेम की व्याकुलता का वर्णन किया है।

व्याख्या:-कवि जीवन की व्याख्या करता हुआ कहता है कि शाम होते देखकर यात्री तेजी से चलता है कि कहीं रास्ते में रात न हो जाए। उसकी मंजिल समीप ही होती है इस कारण वह थकान होने के बावजूद भी जल्दी-जल्दी चलता है। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए उसे दिन जल्दी ढलता प्रतीत होता है। रात होने पर पथिक को अपनी यात्रा बीच में ही समाप्त करनी पड़ेगी, इसलिए थके शरीर में भी उसका उल्लसित, तरंगित और आशान्वित मन उसके पैरों की गति कम नहीं होने देता।

विशेष-

1. कवि ने जीवन की क्षणभंगुरता व प्रेम की व्यग्रता को व्यक्त किया है।
2. भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है, जिसमें खड़ी बोली का प्रयोग है।
3. वियोग श्रृंगार रस की अनुभूति है।

(2) बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-

यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

शब्दार्थ:- प्रत्याशा-आशा। नीड़-घोंसला। पर-पंख। चंचलता-अस्थिरता।

प्रसंग:-प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित गीत 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!' से उद्धृत है। इस गीत के रचयिता "हरिवंश राय बच्चन" जी हैं। इस गीत में कवि ने एकांकी जीवन की कुंठा तथा प्रेम की व्याकुलता का वर्णन किया है।

व्याख्या:-कवि प्रकृति के माध्यम से उदाहरण देता है कि चिड़ियाँ भी दिन ढलने पर चंचल हो उठती हैं। वे शीघ्रातिशीघ्र अपने घोंसलों में पहुँचना चाहती हैं। उन्हें ध्यान आता है कि उनके बच्चे भोजन आदि की आशा में घोंसलों से बाहर झाँक रहे होंगे। यह ध्यान आते ही उनके पंखों में तेजी आ जाती है और वे जल्दी-जल्दी अपने घोंसलों में पहुँच जाना चाहती हैं।

विशेष-

1. उक्त काव्यांश में कवि कह रहा है कि वात्सल्य भाव की व्यग्रता सभी प्राणियों में पाई जाती है।
2. पक्षियों के बच्चों द्वारा घोंसलों से झाँका जाना गति एवं दृश्य बिंब उपस्थित करता है।
3. भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है, जिसमें खड़ी बोली का प्रयोग है।

(3) *मुझसे मिलने को कौन विकल?*
मैं होऊँ किसके हित चंचला?

यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विहवलता हैं!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

शब्दार्थ:- विकल-व्याकुल। हित-लिए, वास्ते। चंचला-क्रियाशील। शिथिल-ढीला। पद-पैर। उर-हृदय। विह्वलता-बेचैनी, भाव आतुरता।

प्रसंग:-प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित गीत 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' से उद्धृत है। इस गीत के रचयिता "हरिवंश राय बच्चन" जी हैं। इस गीत में कवि ने एकांकी जीवन की कुंठा तथा प्रेम की व्याकुलता का वर्णन किया है।

व्याख्या:-कवि कहता है कि इस संसार में वह अकेला है। इस कारण उससे मिलने के लिए कोई व्याकुल नहीं होता, उसकी उत्कंठा से प्रतीक्षा नहीं करता, वह भला किसके लिए भागकर घर जाए। कवि के मन में प्रेम-तरंग जगने का कोई कारण नहीं है। कवि के मन में यह प्रश्न आने पर उसके पैर शिथिल हो जाते हैं। उसके हृदय में यह व्याकुलता भर जाती है कि दिन ढलते ही रात हो जाएगी। रात में एकांकीपन और उसकी प्रिया की वियोग-वेदना उसे अशांत कर देगी। इससे उसका हृदय पीड़ा से बेचैन हो उठता है।

विशेष:-

1. एकांकी जीवन बिताने वाले व्यक्ति की मनोदशा का वास्तविक चित्रण किया गया है।
2. सरल, सहज और भावानुकूल खड़ी बोली का प्रयोग है।
3. तत्सम-प्रधान शब्दावली है जिसमें अभिव्यक्ति की सरलता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

प्रश्न 1:- मैं और, और जग और कहाँ का नाता- पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

प्रश्न 2:- शीतल वाणी में आग'- के होने का क्या अभिप्राय हैं?

प्रश्न 3:- बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

प्रश्न 4:- दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं- की आवृति से कविता की किस विशेषता का पता चलता हैं?

ASSIGNMENT (7) (ANSWER KEY)

प्रश्न(1):- कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'-विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय हैं ?

उत्तर:– जग-जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख-दुख, हानि-लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहाँ कवि सांसारिक दायित्वों की अनदेखी की बात नहीं करता। वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डरकर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अत: इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। ये एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

प्रश्न(2):- जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं-कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

उत्तर:– नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फँसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। अर्थात संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।